अलौकिक शक्तियाँ

ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघव राव

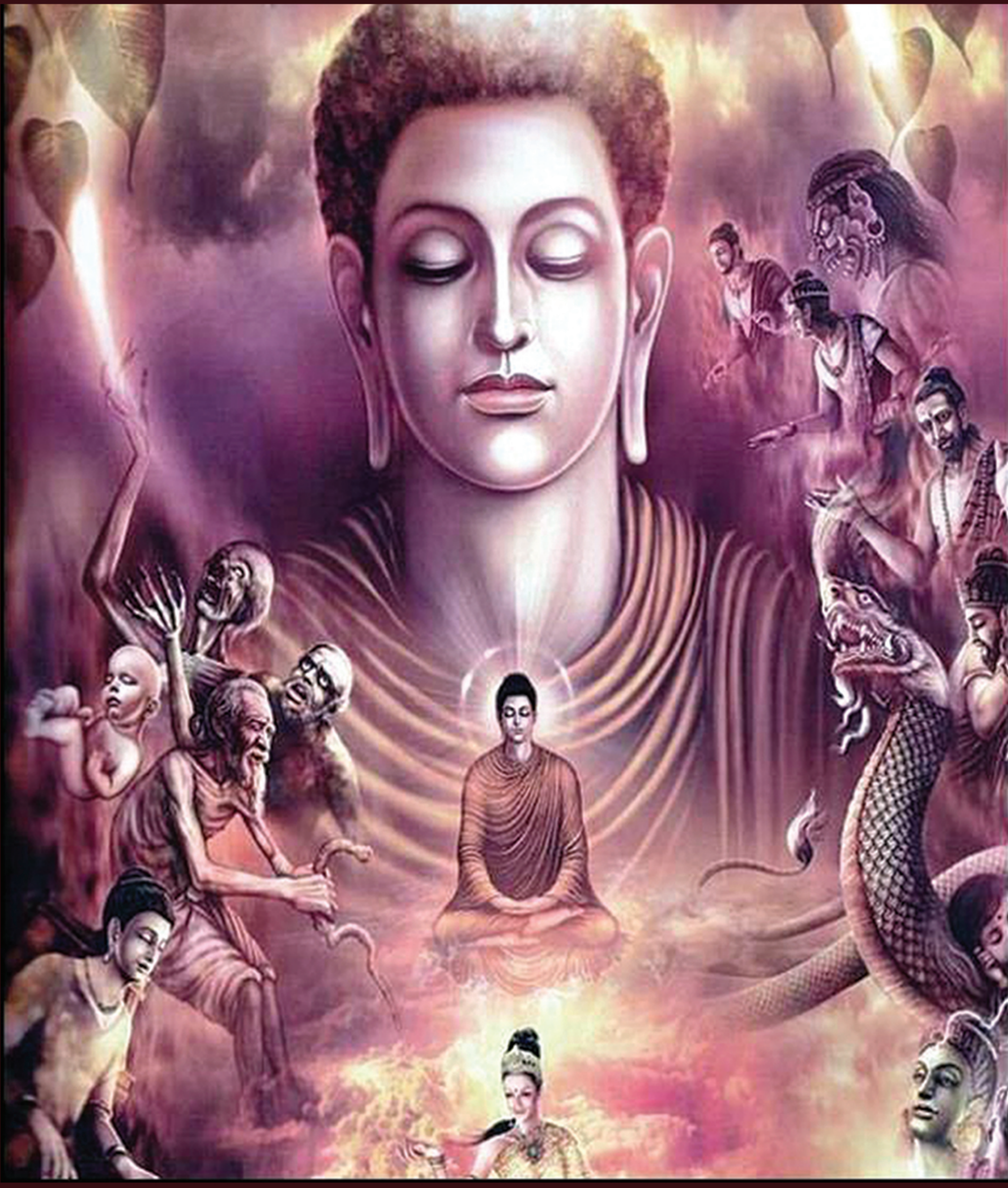

अलौकिक शक्तियाँ

लेखक : श्री ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघवराव

हिन्दी अनुवादः श्रीमति जे.पुष्पलता

For Books Please Contact :

TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO

Tatavarthivari Street, BHIMAVARAM-534201.

W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

Rs.50/-

विषय सूची

1) अलौकिक शक्तियाँ आवश्यक है क्या ?
किस हद तक आवश्यक है ? 3

2) मुमुक्षु के शत्रु 31

3) पुराणों में अलौकिक शक्तियों के बारे में... 32

ब्रह्मविध्वरिष्ठ तटवर्ति राज्यलक्ष्मी के हिन्दी किताब

1) एक और जन्म Rs.160/-
2) साधना में स्थितियाँ.................................. Rs.80/-
3) ज्ञान माला... Rs.70/-
4) श्री दत्तात्रेय जी का 24 गुरूओं ।................. Rs.70/-
5) अगर मानव को योगी बनना है तो ?........... Rs.60/-
6) गुरु पूर्णिमा का विशिष्टता Rs.60/-
7) महात्माओं का संदेशों................................ Rs.50/-
8) मानव के कर्तव्यों Rs.50/-
9) गुरु पूर्णिमा का विशिष्टता Rs.50/-
10)शाकाहार ही मानव का आहार है !.............. Rs.50/-

अलौकिक शक्तियाँ आवश्यक है क्या ? किस हद तक आवश्यक है ?

जो कामों को मानव इन्द्रियों से नहीं कर सकते उसे अलौकिक शक्तियाँ कहते है। उसी प्रकार, जिन विषयों को मानव इन्द्रियों से नहीं जा सकते उसे अलौकिक ज्ञान कहते है।

इन विषयों को यानी अलौकिक ज्ञान,इन कामों को यानी अलौकिक शक्तियाँ, सामान्यो को आश्चर्य होता रहता है। कारण यह है कि वे इन विषयों को नहीं जानते, वे इन कामों को नहीं कर सकते।

ऐसे अलौकिक ज्ञान को दिव्य ज्ञान कहते हैं। ऐसी अलौकिक शक्तियों को दिव्य शक्तियाँ भी कहते हैं। जिन हो ने ऐसी दिव्यता प्राप्त किया, उन्हें दुनिया में 'दिव्य' या 'देवता' बुलाते हैं। ऐसी दिव्यता बहुत कम लोगों को प्राप्त होती है। बहुत कम लोग ऐसी स्थिति को हासिल कर पाते हैं। आइए जानें कि किस प्रकार के लोग उन अलौकिक शक्तियों को हासिल कर सकते हैं।

दुनिया में बहुत कम लोगों को भौतिक विषयों पर, भौतिक भोगों पर विरक्त होते रहते हैं। अर्थात आसक्ति कम हो जाती है। योग वाशिष्ठ में श्री राम को वशिष्ठ महर्षि ने जिन विषयों को बोध किया, उन्हें यथार्थ मानकर वे अनुभव पूर्वक जान लेते हैं।

वे क्या हैं थोड़ा जानें कि।

श्लो ॥ अनन्तानीह दुःखानि सुखं तृणलवोपमं
नातः सुखेषु बध्नीयाधृष्टिम दुःखानुबंधिषु
(योगवाशिष्ठ)

ताः- इस दुनिया में दुःख अनंत हैं, सुख घास का तिनका ; इसलिए, इन दुखों से भरे सांसारिक सुखों पर दृष्टि नहीं रखना चाहिए।

वसिष्ठ महर्षि ने और क्या बोध किया है कि

श्लोः प्रत्यहं प्रत्यवेक्षत देहं नश्वरमात्मनः
संत्यजेत्प शुभिस्तुल्यं श्रायेत्सत्पुरुषोचितम

(योगवाशिष्ठ)

ताः प्रतिदिन इस शरीर की नश्वरता (अस्थायी) पर चिंतन करना चाहिए। पशुओं की तरह विषयभोगों में (असीमित) आसक्ति को त्याग करना चाहिए। इसके अलावा सत्पुरुषों का सांगत्य (सज्जनसांगत्य) सत्य के महानता बताने वाले पुस्तकों (स्वाध्याय) का आश्रय लेना चाहिए।

श्लोः यदनस्तमनायासं तत्पदं सारसिद्दये
साधनीयं प्रयत्नेन पुरुषेण विजानता।

(योगवाशिष्ठ)

ताः बुद्धिमान मानव को पुरुषार्थ सिद्धि के लिए , अनंत दुःखरहित आत्मपद को प्रयास के माध्यम से हासिल करना चाहिए।

जैसा कि वसिष्ठ महर्षि ने बोध किया, बहुत कम लोग अधिक दुःखों से भरे हुए इस जीवन में थोड़े से सुखों से विरक्त होकर, दुःख रहित अर्थात दुःखों से हमेशा के लिए मुक्त होकर आत्मा पद को अर्थात आत्मा-साक्षात्कार पाने के लिए प्रयास करते हैं।

इसके अलावा, श्री आदि शंकराचार्य जी ने भजगोविंदम के माध्यम से दुनिया को बोध किये गए इन विषयों को भी वे समझेंगे। जानें वे क्या है।

''मा कुरु धन जन यौवन गर्वं
हरति निमेषत्कालःसर्वंद्य
माय मय मिद मखिलं भुत्वा
ब्रह्मपदं त्वंप्रविश विदित्वा।''

ताः ''इन पर गर्व मत करो कि तुम्हारें पास इतना धन है, तुम्हारें नीचे

इतने लोग हैं,तुम्हारें पास अच्छा यौवन है। एक मिनट में काल सब कुछ छीन लेता है। जो कुछ भी दिखाई दे रहा है वह सब माया ही है। इस विषय को निरंतर याद रखने से 'ब्रह्मपद' में प्रवेश करने का मार्ग है।''

इसके अलावा शंकराचार्य जी ने और भी

''अर्थ मनर्थं भावय नित्यं
नास्ति ततः सुख लेशः सत्यं
पुत्रादपि धनभाजां भीतिः
सर्वत्रैषा विहिता रीतिः ॥''

ताः ''यह मत भूलिए कि धन हमेशा दुःख का कारण होता है। यह बात वास्तव है कि उसमें थोड़ा भी सुख नहीं है। अमीर आदमी को अपने बेटे से भी भय होता रहता है। कहीं भी परिस्थिति यही है।''

शंकराचार्य जी ने धन के बारे में ही नहीं , बल्कि मानवों में स्वभिकता से होने वाला मोह इछाओ के, विकारों के बारे में विवरण दिया है।

''नारी स्तनभर नाभीदेशं
दृष्ट्या मा गा मोहावेशं ।औ
ऐतम्नांस वसादि विकारं
मनसि विचिन्तय वारं वारम॥ ''

ताः ''युवतियों के स्तनों को,नाभि स्थल को देखने से अधिक मोह नहीं होना चाहिए । वे सब मांस और वसा पदार्थो से बनी संरचनाओं के अलावा और कुछ नहीं हैं। इस सत्य को प्रतिदिन मन में विचारणा करते रहना चाहिए।''

श्री शंकराचार्य जी ने और कहा है कि

''काते कांता धनगत चिंता
वातुल किं तव नास्ति नियंता ।
त्रिजगति सज्जन संगति रेका
भवति भवार्णवतरणे नौका ॥''

ताः ''अरे मूर्ख! तुम अपनी पत्नी के बारे में, धन के बारे में इतनी

चिंता क्यों करते हो ? धार्म प्रशासन करने वाला कोई तानाशाह नहीं है क्या ? जान लें कि तीन कालों में भी भवसागर को पार करवाने वाला नौका 'सज्जन संगति' ही है।''

ऐसा कहते हुए शंकराचार्य जी ने और कहा है कि

''का ते कांता कस्ते पुत्रः
संसारोयमतीव विचित्रः।
कस्य त्वं कः कुत आयातः
तत्त्वं चिंतय तदिह भ्रातः!''

ताः ''अरे भाई! तत्व को विचार करों। कौन है तुम्हारी पत्नी ? कौन है तुम्हारी पति ? कौन है तुम्हारा पुत्र ? यह संसार अत्यंत विचित्र है। तो आखिर तुम किसके हो सोचो। तुम कहां से यहां आए हो ?'' इस तत्व विचारण करोगें तो तुम्हारें सभी भ्रांति मोह चकनाचूर हो जायेंगे।

इस प्रकार, श्री आदि शंकराचार्य जी ने बोध किये संदेश को बार-बार अध्ययन करने से, यह पता चलता है कि उन्होंने जो कुछ बोध किया वह सब सत्य है। वास्तव में मै कौन हू ? कहाँ से आया हू ? क्या करने आया था ? जानने की जिज्ञासा होती है। अब तक जिस के लिए दौड़ रहे हो उस दौड़ को रोक देंगे। सोचते हैं। उन्हें जानने के लिए ध्यान के मार्ग पर आते हैं। ध्यान का अभ्यास करते समय, कई लोग योगियों के बारे में, योगियों से किये गए बोधों के बारे में जानने की कोशिश करते हैं।

ऐसे लोग कुछ आध्यात्मिक पुस्तकों को पढ़ते हैं, अर्थात आत्मा से संबंधित, अर्थात आत्म ज्ञान के बारे में जानकारी देने वाले पुस्तकों को पढ़ते हैं।आत्म-ज्ञान बोध करने वालों के व्याख्यानों सुनते हुए आत्म-साक्षात्कार पाने के लिए संबंधित 'ध्यान' का अभ्यास करते रहते हैं। उनमें से बहुत कम लोगों को 'आत्मा के शब्द' तक पहुंचने की तीव्र इच्छा, 'आत्मा' के बारे में जानने की तीव्र जिज्ञासा होती है। वैसे लोग 'ध्यान' का अभ्यास तीव्रता से करते हैं।

इस प्रकार तीव्र जिज्ञासा के साथ ध्यान का अभ्यास शुरू करके,

ध्यान अभ्यास के साथ–साथ स्वाध्याय, सज्जनसांगत्य के माध्यम से मुमुक्षता की ओर ले जाती।

इन को सांसारिक विषयों पर आसक्ति पूरी तरह से कम हो जाएगा। धन कमाने के लिए, ज़मीन,बंगले हासिल करने के लिए, सोने के आभूषण इकट्ठा करने की इच्छाएं पूरी तरह से हट जाएगा। मेरा परिवार, मेरे बच्चे, मेरी पत्नी, मेरे पति, मेरे रिश्तेदारों से, मेरे दोस्तों से ममत्व पूरी तरह से हट जाएगा। उन में कोई आशाएँ , इच्छाएँ नहीं होते है। जो कुछ भी है उससे संतुष्ट रहते। दूसरों से या, दूसरों के पास कुछ है उसे देखकर ईर्ष्या नहीं करते। आशा नहीं होती है।कारण उसे क्या चाहिए वे नहीं इसलिए। यह जानते है कि सभी दुःख के कारण हैं। खुद को हमेशा के लिए दुःख से बाहर निकलना चाहता है , वे विषय को समझते है कि उन्हें जो प्राप्त करना है वो 'आत्मा का मार्ग' है। वे इसे अपने जीवन का लक्ष्य के रूप में रखते हैं। इसलिए, इन सभी को तृण की तरह माना जाता है।

इसके अलावा,उनमें धीरे से मैं अमुक जाति, अमुक धर्म, अमुक क्षेत्र, अमुक देश यह भाव भी पूरी तरह से हट जाएगा। मैंने वह हासिल किया , इस को कमाया है, मैं उतना हूँ, इतना महान हूँ, इतने महान कार्यों को किया है, वे मुझसे कम है, मैं उन सबसे बेहतर हूँ, ऐसे सारे अहंकार की भावनाएँ पूरी तरह से खो जायेंगे।

ऐसी स्थिति में इनसे किसी को कोई नुकसान नहीं होगा, किसी को नुकसान नहीं करेंगे। उन्हें देखकर कोई नहीं डरेगा। अंततः जानवर भी उन्हें देखकर नहीं डरेंगे। कारण यह है कि वे किसी को नुकसान नहीं करेंगे। वैसे ही खुद भी किसी से नहीं डरते, किसी से डरते नहीं, चाहे कुछ भी हो जाए पीड़ा नहीं होंगे, कुछ भी परवाह नहीं करते।

उतना ही नहीं, वे अतीत के बारे में नहीं सोचते। जीवन में अतीत में घटित घटनाएँ, विषयों पूरी तरह से भूल जाते हैं। याद आया तो भी परवाह नहीं करेगा। वैसे ही भविष्य के बारे में भी नहीं सोचते हैं। जो कुछ भी होगा, ओ होके रहेगा इसी स्थिति में रहते हैं। सब कुछ स्वीकार करने की स्थिति में

होते हैं।

कितने समय होने पर भी वर्तमान में खुद से किए गए ध्यान अभ्यास पर दृष्टि रखते हैं । वे पुस्तकों को पड़ते हुए , ज्ञान के संदेशों को सुनते हुए, ज्ञान को विकसित करने का प्रयास करते हैं। ऐसे लोग जो कुछ भी करते हैं, दूसरों को, अन्य जीवित प्राणियों को उपयोगी कामों को ही करते हैं, लेकिन अपकार करने कामों को नहीं करते। ऐसे स्थिति में रहने वालों को मुमुक्षु कहते हैं। जब ऐसी स्थिति में होते हैं, तो उनका ध्यान अभ्यास तीव्र स्तर पर होता है; अभ्यास अपने चरम स्थायी तक पहुँचने पर, ऐसे परिवर्तन होते हैं जो उन के लिए आश्चर्यजनक होते हैं। कभी भी न जाने विषयों को जानते रहते हैं। जो काम नहीं करपाते अब कर सकते हैं। जब ऐसा होता है तब पहले अपने आप स्वभाविकता से आश्चर्यचकित होते हैं। कुछ पर विश्वास भी नहीं होता। ऐसा उन को कई विषयों के बारे में पता चलता है। कई शक्तियां जो पहले नहीं है अब होते हैं।

ऐसे दृश्य जो कभी नहीं देखा यानि ऐसे दृश्य जो इन दोनों आँखों से नहीं देखे जा सकते, वहां बैठकर देख सकते हैं। यानी दुनिया में कुछ भी, कई भी जगह, यानी सृष्टि में कई जगह, कई लोकों के विचित्र, विशेषताओं को देख सकते हैं। इस प्रकार, इन दोनों आँखों से नहीं देखा जा सकता उन्हें देख सकने , नेत्र को 'दिव्य नेत्र' या 'तीसरी आँख' भी कहते हैं। उस दृष्टि को 'दिव्य दृष्टि' कहते हैं।

इस प्रकार 'दिव्य दृष्टि' को हासिल करने वालों की शक्ति जैसे-जैसे बढ़ती है, उनके दिव्य नेत्र से देख ने की सीमा भी बड़ती जाती है। इस प्रकार वे अतीत से संबंधित विषयों को कुछ सौ साल पहले तक... यदि उनकी शक्ति और बड़ती है, तो कुछ हजार साल पहले तक भी देख सकते हैं। वैसे अतीत से संबधित विषयों को ही नहीं। भविष्य के बारे में, भविष्य में होने वाली विषयों को भी देख सकते हैं, जान सकते हैं। उनकी शक्ति के अनुसार वे कुछ सौ साल ही नहीं, बल्कि कुछ हज़ार साल बाद होने वाली भी जान सकते हैं।

''श्री पोतुलूरि वीरब्रह्मेन्द्र स्वामी,नोस्ट्रडामस'' जैसे लोग इसी श्रेणी में आते हैं।

इस प्रकार, जो अपनी तीसरी आंख यानी दिव्य दृष्टि की शक्ति के आधार पर अपने पिछले जन्मों को जान ने वाले भी हैं। इसी तरह, जो सभी के पिछले जन्मों के बारे में जानने वाले भी हैं। इसी तरह, जो अपना भविष्य, सभी का भविष्य जान ने वाले भी हैं। यही विषय भगवान कृष्ण ने गीता में कहा गया है। उसने कहा की

श्लो: बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन ।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप ॥ (भ.गी.4-5)

ता:- ''हे अर्जुन! तुम्हारे मेरे अब तक अनेक जन्म बीत गये । मैं उन सभी को जानता हूँ, लेकिन आप नहीं जानते।''

उपरोक्त संदेश से यह ज्ञात है होता कि योगीस्वर होने वाले श्री कृष्ण को दिव्य दृष्टि है। यह भी ज्ञात होता है कि मानव होने वाले अर्जुन को दिव्य दृष्टि नहीं है। इसके अनुसार यह जान सकते हैं कि जिन्होंने दिव्य नेत्र को हासिल कर ली या है, वे जहाँ हैं वहाँ से हिले बिना, न केवल दुनिया में, बल्कि सृष्टि में कुछ भी देख सकते हैं, कुछ भी जान सकते हैं।

इसी प्रकार, ऐसे साधक कुछऔर शक्तियों को भी प्रदर्शन कर सकते हैं। वे अपनी सूक्ष्म शरीर से पृथ्वी लोक में किसी भी स्थान को बिना अपनी जगह से हिले, जा सकते हैं। पृथ्वी लोक में ही नहीं , बल्कि सृष्टि के किसी भी लोक में जा सकते हैं। इसी को ''सूक्ष्म शरीर यान'' कहते हैं। इस तरह यात्रा करने की वजह से उन्हें सृष्टि के कई रहस्यों को जान पाते हैं। सामान्य मानव जो नहीं जानते ऐसे कई विषयों को जान पाते हैं । कई सूक्ष्म लोक वासियों से मिलते हैं,जिन से सामान्य लोग नहीं मिल सकते। इस के

वजह से उन्हें सृष्टि से संबंधित बहुत सारा ज्ञान हासिल कर पाते हैं। यह सारा ज्ञान अनुभव पूर्वक से जानते हैं।

इसके अलावा, इस दृश्य शरीर से जब शुक्षमु शरीर बाहर आने पर, यह शरीर मैं नहीं हूँ ,बल्कि आत्मा हूँ यह अनुभव पूर्वक जानते हैं। यानी वह खुद जान सकता हैं कि वह खुद कौन हैं। इस प्रकार, ''सूक्ष्म शरीर यान'' से उन्हें बहुत सारे लाभ प्राप्त होते हैं।

उपरोक्त शक्तियों के अतिरिक्त, (1)विश्वमय प्राण शक्ति (2)सिल्वर कार्ड जो भौतिक शरीर को, सूक्ष्म शरीर से जोड़ ना वाला डोरी ।(3)ईथिनिक बड़ी, यानी प्रनमय कोश। (4) टेलीपति (5) क्लियर वायन्स यानी दिव्य दर्शन। (6) साइकोमेट्री यानी स्पर्श संबंधी अनुभूति का वि विद्या। (7)क्लियर आदियंस यानी , दिव्य श्रवण जैसी अनेक शक्तियों को भी प्राप्त करने की संभावना होती है। अर्थात उन्हें आवश्यकता के अनुसार ऐसी शक्तियां दी जाती हैं। उन्हें जो आवश्यकता है वही दिया जाता है।

ऐसे लोग, यानी जो पूरे प्रयास, साधना करते हैं, इन शक्तियों के साथ, एक एक बार कुछ सिद्धियों को भी प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा प्राप्त करने में सक्षम होना सिद्धत्व कहलाता है। जिन्होंने ऐसे सिद्धियां प्राप्त किया है उन्हें सिद्ध भी बुलाते हैं। पुराणों में ऐसे सिद्धों का उल्लेख आठ प्रकारों में किया गया है। उन्हें 'अष्टसिद्धियों' भी कहा जाता है। वे क्या है कि यानी;

1) **आणिमः**-अर्थात सबसे सूक्ष्म रूप धारण कर सकता है ,

2) **महिमः**- अर्थात सबसे बड़ा रूप धारण कर सकता है

3) **गरिमः**- अर्थात भारी हो जाना

4) **लघिमः**- अर्थात बहुत हल्का हो जाना

5) **प्राप्तिः**- अर्थात जो प्राप्त करना है उसे प्राप्त कर सकते

6) **प्राकाम्यः**- अर्थात विशेष इच्छा को पूरा कर पाना,

7) **ईशत्वं** :- अर्थात सभी पर आधिपत्य हासिल करना,

8) **वशत्वंः**- अर्थात सभी को वश में लाना ।

हम सभी जानते हैं कि, ऐसे सिद्धियाँ को रामायण में अंजनेयास्वामी

ने प्रदर्शित किया।

इस प्रकार ध्यान का अभ्यास करने वाले मानव इंद्रियों के लिए जो संभव नहीं उन अलौकिक शक्तियों को हासिल करने के वजह से अलौकिक ज्ञान हासिल करने का अवसर मिलता है। सामान्यों को जो नहीं पता ऐसे विषयों को जान पाते हैं। इस तरह बहुत सारा ज्ञान हासिल कर सकते हैं।

इसी प्रकार सिद्धियों को प्राप्त करने के वजह से, सामान्य जो काम नहीं कर पाते अब कर सकते हैं, विश्व को, विश्व में रहने वालों को भलाई कर सकते हैं,लोक कल्याण के काम करते हैं। उस तरह अपने लक्ष्यों को आसानी से कर सकते हैं।

इन सबके कारण सृष्टि के संबधित, सृष्टि में अनेक लोकों को संबधित विषयों, रहस्यों, ज्ञान जानने का अवसर मिलता है। इसलिए आपको इस से पहले पता नहीं, सामान्य लोग जो नहीं जानते ऐसे विषयों को जानने से बहुत सारा ज्ञान हासिल कर सकते हैं। इस के द्वारा अपने जीवन का जो लक्ष्य है, ''आत्म–ज्ञान'' को हासिल करके , अपने जीवन का परमार्थ, ''आत्म का मार्ग'' को हासिल करते हैं। इतने काल से इंतजार करने पर भी , जो मुक्ति चाहते हो; अर्थात दु:ख से हमेशा के लिए बाहर निकल सकते हैं।

उपरोक्त विषयों से, हमें सूक्ष्म रूप से यह जानना क्या है कि मनुष्य अपने कठिनाइयों से, समस्याओं से, पीड़ा से यानी दुःख से हमेशा के लिए बाहर निकलने की इच्छा से सांसारिक विषयों की ओर विरक्त होकर, विषय भोगों पर आसक्ति छोड़ कर, ''आत्म-ज्ञान'' को ''आत्म-साक्षात्कार'' को पाने के लिए तीव्र मेहनत यानी ध्यान का अभ्यास करते समय सहजता से उनके लक्ष्य को हासिल करने के लिए उन्हें जो सहकार चाहिए सृष्टि से मिलेगा।

इस प्रकार, उनकी साधना की तीव्रता के अनुसार उन्हें जो चाहिए, उन्हें जो भी ज्ञान को प्राप्त करने के लिए जो आवश्यक शक्तियाँ हो, सिद्धियाँ हो, जो आवश्यक है वो आटोमेटिक सृष्टि से उपलब्ध होते हैं। अर्थात ऐसी शक्तियाँ साधन करते समय स्वाभाविकता से ही आते हैं। उन के लिए उन्हें विशेष प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है, इच्छा करने की आवश्यकता भी नहीं होता, नहीं आता। इस का कारण यह है कि सृष्टि में **''जो साधना करना चाहिए , ओ करते रहते हो जो प्राप्त करना चाहिए है आटोमेटिक उसे प्राप्त करते रहते हो।''**

इस प्रकार ध्यान साधना करने वालों को साधना की तीव्रता के अनुसार स्वाभाविकता से ही उपरोक्त शक्तियाँ प्राप्त करते हैं। इसके अलावा कुछ लोग कुछ सिद्धियाँ भी हासिल कर सकते हैं। यह सब अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए है, लेकिन और किसी के लिए नहीं। बुद्धिमान लोग इस प्रकार हासिल किये शक्तियों के साथ, सिद्धियों के साथ अपने लक्ष्य को आसानी से हासिल कर सकते हैं, अपनी मंजिल तक पहुंचते हैं।

लेकिन इस प्रकार साधना करने वालों में से कुछ लोग जब ऐसी शक्तियाँ , सिद्धियाँ प्राप्त कर लेते हैं, तब उन्हें देखकर गर्व, अहंकार में पड़ जाते हैं, और अपने लक्ष्य को भूल जाते हैं, वे उन सिद्धियों का उपयोग लक्ष्य-साधन के लिए न करके अपने स्वार्थ प्रयोजनों के लिए करने लगते हैं। विषय भोगों पर आसक्ति प्रदर्शन करते रहते हैं। सभी से महान कहल वाने के लिए देखते हैं। उन शक्तियों को सृष्टि विरुद्ध कार्यों को, काम के लिए उपयोग

करते हैं, सृष्टि विरुद्ध के काम करते हैं,सृष्टि के विरुद्ध व्यवहार करते हैं। अपनी शक्तियों का प्रदर्शन करते हुए सबको धोखा देते हैं, औरों को अपने स्वार्थ प्रयोजन के लिए उपयोग करते हैं। जो लोग इन्हें नकारते से, इनका विरोध करते हैं, उन्हें वे अपनी शक्ति को दिखाकर धमकाते हैं, सताते हैं, तरह-तरह की पीड़ाओं में देते हैं। माया बातों से, मंत्र-तंत्र से धोखा देते हैं और हर प्रकार से सृष्टि के विरुद्ध आचरण करते हैं।

ऐसे लोग अपनी शक्तियों को विश्व कल्याण काम के लिए उपयोग नहीं करते। विश्व खैरियत के लिए उपयोग नहीं करते। उस तरह का व्यवहार करने वालों से स्वाभाविकता से ही सृष्टि से हासिल किया गये शक्तियाँ, सिद्धियाँ उनसे वापस ले लिया जाएगा। यानी उन से वो सारी शक्तियाँ गायब हो जाएंगी। वो सिद्धियाँ काम नहीं करते। वे पुनः सामान्य मनुष्य बन जाते हैं।

क्योंकि जो स्वाभाविकता से ऐसी शक्तियों को प्राप्त करने वालों को प्रकृति में कुछ परीक्षाएं रखे जाते हैं। यदि वे प्रकृति द्वारा रखा गया ऐसा परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने पर, वे शक्तियों को प्राप्त करने योग्य बनते हैं। अतः हर स्तर में भी इन साधकों को प्रकृति परीक्षाओं का सामना करना पड़ेगा। वे कैसे होते हैं यानी वे भी नहीं जानते कि ये प्रकृति से रखे गये परीक्षाएं हैं। ऐसे परीक्षाओं में उत्तीर्ण नहीं हो पाते , तो यदि उन्होंने शक्तियाँ प्राप्त करने भी... वे फिर से खो देते हैं।

ऐसे लोगों को तीन विषयों में विशेष रूप से परीक्षाएं रखे जाते हैं। वे क्या है कि (1) कीर्ति, (2) कांत, (3) कनकं। इन्हें (1) क्रोध(अहंकार), (2) वासना(इच्छा), (3) लोभ(आशा) भी कहते हैं।

विशेष रूप से जो लक्षण ज्ञानी में नहीं होने चाहिए हैं वासना, क्रोध,लोभ ही है, इसीलिए जो लोग ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा होती हैं, उनकी प्रकृति से उन विषयों में परीक्षाएं रखते हैं। इसीलिए जिन्हें ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा होती है, उन्हें प्रकृति उन्हीं विषयों में परीक्षाएँ देती है। वे परीक्षाएँ सबके लिए एक जैसे नहीं होते, हर किसी के लिए अलग-अलग तरह के होते हैं। यह विषय भी उन्हें समझ में नहीं आता कि वे परीक्षाएँ हैं।

स्वभाविकता से, ऐसी शक्तियाँ पाने वाले , चारों में उन शक्तियों को प्रदर्शन करते समय दूसरों को, सामान्यों को आश्चर्य चकित होता है। आश्चर्य भी होते हैं। तब सभी उनकी प्रशंसा करते हैं, सराहना करते रहते हैं। आप सामान्य लोग नहीं हैं। दिव्य अंश में पैदा होने वाले , जो काम कोई नहीं कर सकते वो काम करते हैं। ऐसे बातें बोल रहे हैं जो कोई नहीं बोल रहा है। आपकी जैसा कोई नहीं है, आप उतना महान हैं, इतना महान हैं ऐसा प्रशंसा करेंगे तो इनमें गर्व बढ़ता है। इतना ही नहीं इसलिए मैं होने के कारण हासिल कर रहा हूँ,इसलिए मैं होने के कारण प्रदर्शित कर रहा हूँ , इसलिए मैं होने के कारण कह सकता हूँ , बाकी सब से मैं महान होने पर अहंकार बढ़ता है। इस तरह वे सभी से प्रशंसा, सराहना पाने के लिए देख रहा है। इन सब में नाम आने के लिए उत्सुक हैं। बाकी सभी में और महान होना चाहिए, और अधिक लोगों में अपना नाम लाने के लिए उत्सुक हैं। इस प्रकार, अपना नाम, कीर्ति दस दिशाओं में व्याप्त होने के लिए इच्छा करते हैं, आशा करते हैं, प्रयास करते हैं।

इस प्रकार, सोचते हैं कि मै महान हूँ , सभी को छोटी नजर से देखते हैं, सभी से पादनमस्कार को करवाना , पाद पूजा करवाना , करते रहते हैं। यह कितने चरम सीमा तक पहुँच गया है कि यानी अगर कोई ऐसा नहीं करता है तो उसके अहंकार को ठेस पहुंचेगा। यदि उन्हें मौका मिले है वे ऐसा न करने वालों में भी बदला लेते हैं। उनका अपमान भी करते हैं। अंततः वो खुद महान समझकर गर्व साथ, अहंकार के साथ जो काम नहीं करना चाहिए वही करते रहते हैं।

सृष्टि विरुद्ध के काम करते हैं। प्रकृति के विरुद्ध व्यवहार करते हैं। दूसरों को, सामान्यों को, मासूमों को अपने स्वलाभ के लिए उपयोग करते हैं। इस प्रकार उन्हें दिये गये शक्तियों को,ज्ञान को अपने लक्ष्य के अलावा प्रकृति के विरुद्ध कार्यों के लिए उपयोग करने के वजह से, वे स्वाभाविकता से प्रकृति द्वारा रखी गये ''कीर्ति'' नामक परीक्षा में उन्हें विफलता के वजह से, स्वभविकता से प्रकृति द्वारा दिये गए स्वभविकता से शक्तियों को खोना पड़ेगा। अर्थात

प्रकृति द्वारा वापस ले लिया जाएगा। इस प्रकार उन्होंने जो हासिल कर लिया उन्हें खो देते हैं। फिर से प्रारंभ को आते हैं। यानी साधारण मानव बन जाते हैं।

अगर कोई भी इस कीर्ति नामक परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर चाहे वह कितना भी जानता हों , चाहे कितनी भी शक्तियाँ हों बिना किसी गर्व के,बिना किसी अहंकार के यदि सामान्य व्यवहार करते रहेंगे तो उन्हें पता चले बिना उन्हें और एक परीक्षा का सामना करना पड़ेगा।

स्वभविकता से वे स्त्री हो तो पुरुष पर, वे पुरुष हो, तो स्त्रीयों पर उनके कहे गए बातों पर, उनके द्वारा किए गए काम पर , उनके द्वारा प्रदर्शित किए गए शक्तियों पर आकर्षित होकर उन से नजदीकी परिचित तरीके से व्यवहार करते हैं। करीब आने का प्रयास करते हैं। उनमें कुछ लोग इनके पूरी तरह से गुलाम बन जाते हैं। यदि वे ऐसे ही स्त्रियों के मोह में पड़ गए... तो वो कमजोरी उनमें प्रवेश हुवा तो...उन पर इनका व्यवहार बदल जाएगा। उनके साथ असभ्य व्यवहार करना, जो काम नहीं करना चाहिए वो करते रहते हैं।

धीरे से यह उनकी लत की तरह बदल जाएगा। खुद अनुभव करने वाले पर ही नहीं बल्कि सभी पर इनका दृष्टि होता है। व्यसे ही उसको जो भी पसंद है उन सभी को अनुभव करने का प्रयास करते हैं। उसके लिए किसी भी तरह उनको वश में लानेका प्रयास करते हैं। उसकी बुद्धि को विभिन्न तरीकों से उसके के लिए प्रदर्शित करता है। मायावी बाते कहते हैं। वे कहते हैं कि पिछले जन्म में तुम मेरी पत्नी थीं, तुम और मैं प्रेमी से...ऐसे तरह-तरह के मायावी बाते कहते हैं। अपनी शक्तियों का प्रदर्शन करते हैं, दिखाते हैं। वे किसी तरह अपनी इच्छाओं को पूरा करने का प्रयास करते हैं। सृष्टि विरुद्ध व्यवहार करते हैं। इस प्रकार वैसे ही अपने लक्ष्य साधना के लिए दिये गए शक्तियों को लक्ष्य प्राप्त करने के लिए उपयोग करे बिना स्वार्थ प्रयोजन के लिए उपयोग करने का प्रयास करने के वजह से, सृष्टि विरुद्ध उपयोग करने के वजह से प्रकृति से रखा गया 'कांता' नामक परीक्षा में यानी वासना की परीक्षा में असफल होने के कारण,स्वभविकता से प्रकृति द्वारा दिये गए शक्तियों

को, प्रकृति से उपसंहार लिया जाएगा। यानी वे खो देते हैं। फिर से सामान्य मनुष्य बन जाते हैं।

ऐसी परीक्षाएँ भी पार करने वाले को इस प्रकृति में एक और परीक्षा का सामना करना पड़ता है। उन्हें अनायास धन प्राप्त होता रहते हैं । उनके कामों को, उनके शक्तियों को देखकर, इस इरादे से कि वे बहुत महान हैं, कई लोग उन्हें बिना मांगे ही धन, सोना, और विभिन्न वस्तुओं को देते रहते हैं। शुरू में उतनी आसक्ति नहीं दिखाने पर भी सभी देता रहे तो धीरे लेना शुरू करते हैं। इस तरह धीरे-धीरे से धन पर मोह बढ़ता जाता हैं। धीरे से आशा भी बढ़ती रहती हैं । उस आशा से, धन बढ़ाने के लिए विश्व कल्याण कहते हुए सभी से चंदा को वसूल करना, विभिन्न प्राजेक्टोंको रखकर पैसे वसूल करना, आश्रम के लिए विभिन्न कामों के लिए, कार्यक्रम के लिए ऐसे कहते हुए चंदा वसूल करना, ''वह दूंगा, यह करूंगा'' कहते हुए बहुत पैसा वसूल करते रहते हैं। आध्यात्मिकता के मुखौटे में धन आर्जित कर रहे हैं। आध्यात्मिक केंद्र, यह और वह जैसे विभिन्न तरीकों से धन कमाने के लिए प्रयास करते हैं। अंततः उनका लक्ष्य भूल कर धन कमाने के लक्ष्य के साथ जीते हैं। धन कमाने की धन को और भी अधिक बढ़ाने के लिए विभिन्न काम,जो नहीं करना चाहिए वे करते हैं। सृष्टि के विरुद्ध व्यवहार करते हैं। इस प्रकार सब कुछ छोड़ने वाले अंततः सबके लिए तड़पते हुए, प्रकृति द्वारा रखी गई ''कनकं'' अर्थात ''धन'' की परीक्षा में हार जाने के कारण अपनी शक्तियाँ खो बैठते हैं। उस तरह फिर सामान्य मानव बन जाते हैं, शक्तिहीन बन जाते हैं।

पुराणों में विश्वामित्र महर्षि के जीवन के द्वारा हम जान सकते हैं कि सृष्टि में ये तीन प्रकार के परिक्षाएं होते हैं।

पूर्व विश्वामित्र महर्षि ने 1000 वर्षों तक तपस्या की थी यानी 'ध्यान' कीया था। इसलिए उन्हें अपार शक्ति हासिल कर लिया । उन्होंने इतनी शक्ति हासिल कर लिया है कि सृष्टि की प्रति-सृष्टि रचना करने के लिए शक्ति हासिल कर लिया है। उस प्रकार अपार शक्ति प्राप्त कर चुके विश्वामित्र

को देखकर इन्द्र भयभीत होआ। इतनी सारी शक्तियाँ हासिल कर लेने विश्वामित्र को उनकी परीक्षा करना चाहता था, क्योंकि उन्हें संदेह था कि विश्व को भला करेंगे ? या हानि ?

मेनका को भेज दिया। महर्षि विश्वामित्र ने मेनका की सौधर्य को देखकर मोहित हुआ। मुझसे शादी करने के लिए कहा। तब मेनका ने एक शर्त रखी। क्या ? अगर मेरी इच्छा मना किया ...तो तब तुम्हें छोड़ के चला जाउंगी उसने कहा। महर्षि विश्वामित्र ने इस पर अंगीकार दिया । दोनों ने विवाह कर लिया। संसार कर रहे हैं। लेकिन मेनका हर दिन विचित्र इच्छाएं मांग रही थी । जिस काल में चमेली के फूल नहीं मिलते तब चमेली के फूल इच्छा करती थी। जिस काल में आम का फल नहीं मिलते तब आम का फल इच्छा करती थी ।

महर्षि मेनका की बात को विश्वामित्र न नहीं कह पाये, उसकी इच्छा पूरी करने के लिए विस्वामित्र ने जो शक्ति हासिल किया उसमे से थोड़ा खर्च करके चमेली के फूलों को सृष्टि किया, आम का फलों को सृष्ट किया, एक बार तुम्हारे साथ आकाश में विहार करना चाहताी हूँ ऐसा कहती थी। इस प्रकार थोड़ा शक्ति खर्च करके उसकी इच्छा करता था । उस प्रकार मेनका

तरह– तरह की अजीब इच्छाएँ को इच्छा करती थी । उसकी इच्छाएँ पूरी करूँगा ऐसा वचन देने वाले विश्वामित्र अपनी शक्ति खर्च करते हुए उसकी इच्छाएँ पूरी करते थे।

ऐसे होते हुए ,मेनका ने फिर एक बार आकाश विहार करने की इच्छा किया । तब विश्वामित्र ने कहा ठीक है, हाथों को ऊपर उठाके... ऊपर जाना चाहते थे। लेकिन इस बार उठ नहीं पाए। चाहे कितनी भी प्रयास करने से भी उठ नहीं सके। तब विश्वामित्र को समझ में आया। उन्होंने महसूस किया कि 'तपस्या' यानी 'ध्यान' से जो भी हासिल किया सारी शक्ति, खर्च हो चुकी थी। तब उन्होंने मेनका से कहा... मेरी सारी शक्ति खर्च हो गई है। उसने कहा, 'मैं ऊपर उठ नहीं सकता।' तब मेनका अपने से रखी गई शर्त को याद दिलाकर विश्वामित्र को छोड़कर स्वर्ग चली गई। तभी विश्वामित्र बहुत दु:खी हुए। 1000 वर्षों तक उसने जो इतनी कड़ी मेहनत किया सारी तप: शक्ति खर्च हो गई! उन्हें इस बात का दु:ख था कि मेनका की इच्छाओं को पूरा करने के लिए उन्होंने कितनी शक्ति खो दी। क्योंकि 1000 वर्ष यानी आसान बात नहीं है ! कितनी मेहनत कीया? कितन मेहनत करके कठिन तपस्या(ध्यान) कीया? उन्होंने जो कड़ी मेहनत किया, हासिल किया शक्ति दोनों वृथा हो गया ना? लेकिन मेनका भी नही है ना? यानी वो भी चली गई है। अब वहां क्या है, कुछ भी नहीं है? चाहे आप कितना भी कष्ट उठाएं, कोई फायदा नहीं है, है ना?खोई हुई शक्ति कभी वापस नहीं आती, है ना? कुछ करने को न होने पर फिर से तपस्या आरम्भ कर दी। फिर 1000 वर्ष तक 'तपस्या' यानी 'ध्यान' किया। फिर से अपार शक्ति हासिल कर लिया।

इस बार इन्द्र ने रम्भा को भेज दिया। रम्ब को देखकर विश्वामित्र अत्यंत क्रोधित हो गए। इन्द्र मुझे बेवकूफ़ समझता है। उसका काम बताऊँगा क्रोधित हो गया,कर रम्बा को शिला बन जाने को श्राप दिया। लेकिन उस शाप के कारण फिर से अपनी सारी शक्ति खो दी। इस बार विश्वामित्र ने क्रोध के वजह से यानी गुस्सा यानी अहंकार के वजह से अपनी सारी शक्ति खो दी।

फिर से साधारण मनुष्य बन गया। फिर से बहुत दुखी हो गया।

कुछ भी करने को न होने पर फिर से दृढ़ संकल्प के साथ तपस्या शुरू कर दी। इस बार भी 1000 वर्ष की 'तपस्या' यानी 'ध्यान' की और फिर से उतना शक्ति हासिल किया। इस बार इन्द्र ने लोभ की परीक्षा रखा। यानी देखना चाहता था कि धन के विषयों में कैसा व्यवहार करता है। कारण इससे पहले वासना को, क्रोध को परीक्षा रखा था इसलिए।

एक दिन विश्वामित्र ने भोजन करने के लिए भोजन के पास बैठा था। उसी समय में इन्द्र वेश बदलकर विश्वामित्र के घर आये, भोजन माँगा था। तब विश्वामित्र ने सोचा। उसे एहसास हुआ कि इंद्र इस तरह से परीक्षा लेने आये है। तुरन्त इन्द्र को बुला कर उन्हें वो भोजन दिया जो वे खाने वाले थे। तब इन्द्र ने अपना असली रूप दिखाकर विश्वामित्रा आपके लोभ के विषय में परीक्षा लेना चाहता था। आप जीत गए! उन्होंने उनकी कीर्ति करते हुए कहा, ''अब आप सच्चे ब्रह्म ज्ञानी बन गये हैं, ब्रह्मर्षि बन गए हैं'', और अदृश्य हो गये हैं।

उपरोक्त पौराणिक कहानी से हम जान सकते हैं कि सृष्टि में किसी को भी इस प्रकार की परीक्षाएं होते है। इसलिए, जिन लोगों ने शक्तियां प्राप्त की हैं, उन्हें गर्व नहीं होना चाहिए। डींग नहीं करना चाहिए, अहंकार का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। स्त्री के आकर्षण में नहीं पड़ना चाहिए।धन के प्रति आकर्षित नहीं होना चाहिए। काम, क्रोध, लोभ पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। अपने नियंत्रण में रखना चाहिए। ऐसे लोग ही 'ज्ञानि' है। उन्हें जानना चाहिए कि इस सृष्टि में 'ज्ञान' प्राप्त करने के योग्यता उन्हें ही हैं।

वर्तमान में बहुत से लोग ध्यानियों को ध्यान का लक्ष्य क्या है यह जाने बगैर, ध्यान क्यों कर रहे हैं यह जाने बिना, ऐसे शक्तियों के लिए देख रहे हैं। ऐसे अनुभवों के लिए आशा कर रहे हैं । वे उनके साथ मौज-मस्ती कर सकेंगे ऐसा भाव कर रहे हैं। सभी में महानता प्रदर्शन करने के लिए प्रयास कर रहे हैं। ऐसा भाव कर रहे हैं कि ध्यान केवल अनुभवों के लिए है। हमेशा...ध्यान

का अभ्यास से अधिक अनुभव आया है ? या नहीं ? इस को महत्व दे रहे हैं । यदि उन्हें ऐसी चीजों का थोड़ा सा अनुभव हुआ तो बड़ाई बोलने की, सभी में अपनी महानता प्रदर्शित करने का प्रयास कर रहे हैं, खुद की बड़ाई बोल रहे हैं। उन्हें सुनने वालें में बहुत से लोग ध्यान शुरु करने से ही अनुभवों के लिए देख रहे हैं। यदि उन्हें अनुभव नहीं आया तो निराश हो रहे हैं। ऐसे अनुभवों को कहने वालों को देखकर खुद प्राप्त कर पाए पीड़ित होती रहती है ।

ऐसे लोग अधिक होने के कारण उन्हें आकर्षित करने के लिए, उन्हें आकर्षित करके अपने स्वार्थ लाभों के उपयोग करने के लिए बहुत से लोग अनेक प्रकार से प्रयास कर रहे हैं। उन्हें प्रलोभन कर रहे हैं। तरह तरह से धोखा दे रहे हैं।

इसलिए जान लीजिए कि मनुष्यों के लिए अलौकिक शक्तियाँ आवश्यक है! किसलिए? जीवन के दुख से स्थायी रूप में बाहर निकलने के लिए आवश्यक 'आत्मज्ञान' प्राप्त करने के लिए, 'आत्मसाक्षात्कार' पाने के लिए। क्योंकि यदि वो शक्तियाँ न हों तो कोई भी सृष्टि में अलौकिक ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते। लक्ष्य को हासिल नहीं कर सकते।

इसलिए ''**अलौकिक शक्तियाँ मनुष्य के लिए निश्चित रूप से आवश्यक ही है । यह जानना है कि किस हद तक आवश्यक है यानी आत्मा ज्ञान को पाने के लिए, न केवल आत्मा पथ को पाने के लिए,और किसी अन्य लाभों के लिए नहीं''।**

जैसा भी हो इन अनुभवों को, शक्तियों को, सिद्धों को, मौज-मस्ती की पूरा के लिए, समस्याओं को सुलझाने के लिए, सांसारिक इच्छाओं को पूरा करने के लिए, स्वार्थ लाभों के लिए उपयोग करने के लिए बिल्कुल नहीं । यह जानना चाहिए कि मनुष्य को ज्ञान हासिल करने के लिए, परीपूर्ण ज्ञानि बनने के लिए, अनुभव पूर्वक से आत्म-ज्ञान को जानना है। दरसल मानव जीवन का लक्ष्य यही है।

इसलिए, ध्यान साधना करने वाले, अनुभवों पर, शक्तियों पर दृष्टि

नहीं करना चाहिए, उनके बारे में नहीं सोचना चाहिए। वास्तव में कितना ज्ञान प्राप्त किया हैं ? हम कितने ज्ञानी हो गए हैं ? हमारा व्यवहार में कितना परिवर्तन आया है ? ज्ञान में कितना बढ़ गया है ? हमारे काम, व्यवहार दूसरों के लिए आदर्श से हैं क्या ? या नहीं ? इन पर दृष्टि रखना चाहिए।

इसलिए कितने प्रकार के अनुभव आये हैं ? यह महत्वपूर्ण नहीं है। पहले से लेकर, अब तक व्यवहार में कितना परिवर्तन आया हैं ? यह जानना महत्वपूर्ण है। यह जानना है कि यदि ध्यान साधना के माध्यम से अनुभवों को हासिल करने पर भी व्यवहार नहीं बदलेगा तो सारा किया हुआ अभ्यास व्यर्थ है। यह जान लें कि खास तौर से **''जो चाहिए वो ज्ञान है, जो आना चाहिए वो पिरिवर्तन है''**।

इसलिए यह जान लें कि भले ही आप अपने एक पिछले जन्म को देखेंगे तो भी! भले ही किसी एक समस्या को हल कर लिया तो भी, किसी एक बीमारी को कम कर लिया तो भी, कोई खास फाइदा नहीं है। इसका कारण यह है कि एक समस्या हल करने से कोई लाभ नहीं है। मनुष्य को कई समस्याएँ होते हैं। अगर एक समस्या परिष्कार हो जाए तो भी और एक समस्या उत्पन्न होती है। एक बीमारी कम हो जाए तो एक और बीमारी आएगी। इस प्रकार जीवन में कई समस्यायें कठिनाइयाँ होते हैं । इसके अलावा पिछले जन्म को देख लिया तो ठीक है! यदि हमारा व्यवहार में परिवर्तन नहीं आया तो क्या फायदा ? 'ज्ञान' नहीं मिलता है तो क्या लाभ ? इस के बारे में सोचिए। पिछले जन्मों को इस तरह से देखना केवल मनोरंजन के लिए है और इससे अधिक कोई लाभ नहीं है। मनुष्य को कई मनोरंजन होते हैं। उन में यह एक मनोरंजन केवल है।

क्योंकि इस सृष्टि में चाहे जो भी हो! जो कुछ भी हो, सब अच्छे के लिए! इसका कारण है कि पिछले जन्मों को भूलना ही नहीं, अतीत को भूलना मनुष्य को 'प्रकृति' से दिया गया एक वरदान है । कारण यह है कि मनुष्य अतीत को नहीं भूलेगा तो शांति से नहीं रह सकता, वर्तमान में नहीं रह

सकता। इसलिए प्रकृति कुछ भी करों, कारण यह है कि मनुष्य अतीत को नहीं भूलता तो शांति से नहीं रह सकता, वह वर्तमान में नहीं रह सकता। इसलिए प्रकृति जो कुछ भी करती है, मानवों के भलाई के लिए, सोचेंगे तो प्रकृति जो कुछ करती है, मनुष्यों को लाभ के लिए ही होते है ।

क्योंकि वर्तमान में विश्व में गौर से देखें तो किसी को शांति नहीं है। इसका मुख्य कारण यही है कि वे अपने पिछले जीवन में हुई दुखद घटनाओं को भूल नहीं पाना। क्योंकि हर किसी के जीवन में कुछ न कुछ संघटन घटित होते रहते हैं । व्यापार में नष्ट आता है, पारिवार में लड़ाई होते हैं, कोई भी दुर्घटना हो जाती है, राजनीति में हार हो जाना, परीक्षाओं में असफल होना, पत्नी हो, पति हो, बच्चे हो उन में कोई भी मर जाना, कोई बड़ी बीमारी से पीड़ित होना जैसे कई घटित होते रहते हैं।

जब ऐसा होता है तो दु:खी होना,पीड़ित होना, इसके कारण शांति खोना यह स्वाभाविक है। लेकिन यदि उस घटना को हुए तीन महीने हो, छ:ह महीने हो, भले ही तीन साल बीत गए हों, फिर भी याद आने पर, चाहे वह घटना दोबारा न भी हो, ऐसे दुखी होते हैं जैसे अभी-अभी घटित हुई हो। शांति खो जाते हैं। चाहे आप इसे कितनी भी बार याद करें, हर बार अशांति में होंगे। इसका कारण यह है कि जो घटना घटी उसे भूल नहीं पाना। यानी अतीत को भूल नहीं पाना।

अगर वे अतीत को भूल जा सकते हैं, वर्तमान में जी सकेंगे तो वे शांति से जी सकते हैं। इसीलिए जिन लोगों के साथ ऐसी घटनाएं हुई जो हुआ उन विषयों को भूलने के लिए कई प्रयास करते हैं। गुरुओं का आश्रय लेते हैं। स्थान को बदलते हैं। कई उतार-चढ़ाव पड़ते रहते हैं। यह सब अतीत को भूलने के लिए ही, है ना? यानी अतीत को भूलना आवश्यक ही, है ना?

जो कुछ भी हो, सृष्टि में व्यवस्था यह है कि अतीत को भुलाना , उसके बिना कोई भी जीवित नहीं रह सकता। उदाहरण के लिए पति, पत्नी को ही लें। कई लोग अक्सर झगड़ते रहते हैं। लेकिन जब तक इस झगड़ा को

भूल नहीं पाते , तब तक दोनों नजदीक नहीं हो सकते। फिर से एक नहीं हो सकते। उन दोनों को जुटाने वाला भूलना ही है।

इसी प्रकार यदि दो वर्ग के बीच में झगडा होता है, तो मध्यस्थ होने वाले समझौता करने के ल मामले को कुछ दिनों के लिए टालते हैं। इसका कारण यह है कि उनके गुस्से को भूलकर उद्वेग कम होने के लिए। जो कुछ हुआ उसे दिन बीतने के साथ भूलकर उनके जिद्ध पर नहीं अड़े रहने के लिए।

इस तरह जो भी घटित हुआ उसे भूल को कहते हैं। कारण यह है कि सब कुछ सामान्य स्थिति को आ जाएगा, इसलिए सोचिए अगर इस जन्म में जो भी हुआ यदि आप भूल जाने के लिए तरह-तरह की कोशिशें कर रहे हैं और यह पर्याप्त न होकर, फिर पिछले जन्मों को देखकर उस अतीत को भी याद करेंगे, तो सोचिए उनकी परिस्थिति कैसी होगी। क्या वे जीवित रह सकेंगे है ? सोचिए।

इतना ही नहीं, यदि सभी को पिछले जन्मों की चेतना होती, तो सब कुछ अस्तव्यस्त होता, सारे झगड़े ही होते, सब कुछ अराजकता ही होगा। क्योंकि मान लीजिए किसी ने पिछला जन्म को देख लिया है। यह पता चला कि अगर उनकी वर्तमान पत्नी पिछले जन्म में उनकी माँ थी। तब उनकी परिस्थिति क्या है ? क्या वर्तमान पत्नी के साथ संसार कर सकते हैं ? इसी प्रकार यदि यह पता चले कि पूर्वजन्म में उन का बेटा बद्ध शत्रु था, तो उन दोनों की परिस्थिति कैसे होगा है ? फिर से प्रतिकार लेने का प्रयास किया तो वो संसार कैसे होगा ? इसी प्रकार, अगर एक महिला को पता चले कि उसका वर्तमान पति पिछले जन्म में उसका पिता था,तब वह पति के साथ संसार कर सकती है क्या ? बताइए ?

इसके अलावा, अगर आपको पता चला कि पड़ोस के व्यक्ति की पत्नी पिछले जन्म में अपनी पत्नी थी, उसे आने को कहूँगा तो आएगी क्या ? अगर अपको पिछले जन्मों में हुई इस तरह के विषयों को जानोगे उनकी परिस्थिति क्या है ? इसीलिए सृष्टि में पिछले जन्मों को भूलना दी गई थी। यह

भूलना अच्छे के लिए ही है, लेकिन और किसी अन्य के लिए नहीं। हमें इन विषयों को जानकारी नहीं हों सकता, लेकिन सृष्टि करने वाले को यानी भगवान जानते हैं ।

इतना ही नहीं, यदि यह भी पता चल जाए कि आपके पिछले जन्मों में आपके बच्चे, उनके वंशज और परिवारजन आज कहाँ–कहाँ हैं और मान लीजिए कि वे बहुत कठिनाइयों में हैं, तो क्या आप उन सबका पालन–पोषण कर पाएँगे ? जब आप अपने वर्तमान परिवार को ठीक से संसार को तैर नहीं कर पा रहे हो, तो उन सबका कैसे करेंगे ? इसलिए पिछले जन्मों को जानने की उत्सुकता को, शोक छोड़ दें।

वर्तमान के बारे में, वर्तमान जीवन के बारे में, वर्तमान जीवन में क्या करना है सोचिए। जो हो गया,जो घटित हो गया उनके बारे में आसक्ति मत दिखाइए। चाहे कुछ भी हो, हमेशा वर्तमान में जीने का प्रयास करना चाहिए। यही ज्ञानी का लक्षण है। जान लीजिए कि यही सर्वोत्तम है।

क्योंकि कुछ लोग हमें सलाह दे सकते हैं। अपने पिछले जन्म को देखेंगे तो हम अपनी वर्तमान समस्याओं का कारण जान सकते हैं। कहते हैं कि इस तरह से किसी समस्या का हल कर सकते हैं। लेकिन पत्रीजी हमे को बताते हैं कि किसी भी समस्या का कारण हमारे पिछले जन्मों में किए गए कर्म हैं। इसलिए अगर समस्याओं को दूर करने के लिए तो कर्मों का नाश होना चाहिए। कर्मों को दूर करना होती, तो ध्यान करना चाहिए। इसलिए ध्यान करना चाहिए। कर्म दूर हो जाएंगे। सभी समस्याएं अपने आप दूर हो जाएंगे। इसके लिए पिछले जन्म को देखने की जरूरत नहीं है।

इसके बारे में और सोचिए, अगर हम अपने पिछले जन्म को देखकर एक समस्या को हल करें, तो क्या कोई और समस्याएं नहीं आएंगे ? यानी जीवन में ऐसे ही आते रहते हैं। एक कठिनाई के बाद दूसरी कठिनाई, एक समस्या के बाद दूसरी समस्या। इसका अंत कहां है ?इतना ही नहीं हमने अतीत में कई जन्म लिए हैं, सिर्फ एक जन्म देखकर ही क्या पर्याप्त है ?क्या

कोई हमें ये सब फिल्म रील की तरह दिखा सकता है ? यह किसी के लिए संभव है क्या ?

इसलिए, किसी एक समस्या के लिए पिछले जन्म को देखने के बजाय, समस्याओं का वास्तविक कारण जानने का प्रयास करें उनसे हमेशा के लिए बाहर आने के लिए कड़ी मेहनत करिए। वास्तविक में समस्याओं को नहीं आने देना चाहिए, इस के लिए प्रयास करना चाहिए। केवल मनोरंजन के लिए ऐसी नई समस्याओं की सृष्टि मत कीजिए।

जो कुछ भी हो, याद रखना चाहिए। अगर आप अपनी साधना कर रहे हैं, तो आपको किसी की जरूरत पड़ने पर आप अपने पिछले जन्मों को खुद ही देख सकते हैं। अगर आप उसे इस तरह से देख पा रहे हैं, इसका मतलब यह है कि यह आवश्यक है। यदि आप अपने पिछले जन्मों को आप नहीं देख पा रहे हैं, तो आपको यह जान लेना चाहिए कि आपको इसकी आवश्यकता नहीं है। क्योंकि यदि आप इस सृष्टि में ''जो करना चाहिए वो करेंगे तो जो पाना चाहिए वो पाएंगे।'' इसलिए, इच्छा करने की जरूरत नहीं है। प्रयास करने की जरूरत नहीं है। इसलिए, जो धन आप मौज के लिए खर्च करते हैं, उसे विश्व कल्याण के लिए खर्च करिए। अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए खर्च करिए। यदि आप ऐसा करेंगे तो आपको लाभ होगा लेकिन मौज-मस्ती के लिए पैसा खर्च करने पर क्या फाईदा होता है ?

इसलिए, अपने पिछले जन्मों को देखने को उस्तुकता नहीं होना चाहिए। आप अपनी साधन करिए। यदि आवश्यक हुआ तो आटोमेटिक ही आप देख सकेंगे। जब आपके ज्ञान की परिधि बड़ता है, तो पिछले जन्मों को देखने में कोई बात नहीं है।

इसके अलावा कुछ लोग ध्यान में कुछ दृश्य देखकर, कुछ स्थानों को देखकर वे इस बात पर प्रसन्न होने लगते हैं कि उनकी तीसरी आँख खुल गयी है। हम थर्ड ऐं मास्ट्र बन गए है एसे बड़ाई बाते कहते हैं। उन्हें लगता है कि वे बाकी सभी से बेहतर स्थिति में हैं। लेकिन यह प्रारंभ स्थिति है,

लेकिन पूर्ण स्थिति नहीं है। पूर्ण स्थिति तक पहुंचने के लिए अधिक साधना करना चाहिए। कई परीक्षाओं का सामना करना पड़ेगा।

क्योंकि कुछ दृश्य दिखाई देते ही वे मानो किसी महान स्थिति को बड़ गए हों, हर जगह मुझे वह दिखाई दिया, मैंने यह देखा ऐसे शेख़ी कहते रहते हैं। ऐसा अनुभव ध्यान करने से आया है, यानी कुछ महीनों या वर्षों में बोलते है।

लेकिन यदि आप किसी प्राथमिक विद्यालय में जाकर , वहां के बच्चों से 15 मिनट तक ध्यान करवाने के बाद उनके अनुभवों को पूछिए वे सभी कुछ न कुछ देखा है यानी पेड़ों को, पहाड़ों को , समुद्र को, रंगों को ऐसा कुछ ना कुछ बोलते हैं। और हमने साईं बाबा दिखाई दिया। कुछ लोग कहते हैं कि वेंकटेश्वर स्वामी दिखाई दिया । यानी जो बच्चे एक 15 मिनिट ध्यान करने वाले, सभी बच्चे 'थर्ड ऐ मास्टर' ही है ना? यानी वर्षों से हासिल किया अनुभव बच्चों ने इसे 15 मिनिट में हासिल कर लिया है ना ? इन में कौन महान है? बोलिए।

इसलिए जब ऐसे अनुभव आने पर भी, ऐसा नहीं है कि वे किसी महान स्थिति में पहुंच गए हैं। इनमें से वास्तव में मुख्य नहीं है। आप में, आपके व्यवहार में कितना परिवर्तन आया है। आपका ज्ञान कितना बढ गया है? जान लीजिए कि यही मुख्य है। यदि आप वास्तव में ज्ञानी हैं, तो ऐसी बड़ाई बाते नहीं कहेंगे।

इसीलिए पत्री जी कहते हैं कि ये मुमूक्षुओं के शत्रु हैं, क्योंकि "साधकों को मिलने वाले सीमित ज्ञान को ही पूर्ण ज्ञान" मान लेने का खतरा रहता है। यह पतन की ओर ले जाता है।

वैसे ही कई लोग "सूक्ष्म शरीर यान" करने के लिए उस्तुकता हो रहे हैं । चाहे आप कितने दिन तक ध्यान करने पर भी, ये अनुभव नहीं आता है, तो वे निरुस्ताह हो जाते हैं। लेकिन यह अनुभव को भी प्रकृति में जरूरत होने वालों को, आवश्यकता पड़ने पर प्राप्त होती है। इतना ही नहीं यह

अनुभव अपेक्षा करने से, या इच्छा करने से नहीं आता। यह सूक्ष्म शारीर यान वास्तव में रात को सोते समय में हर किसी को ऐसा होता रहता है । ये अनुभव सपनों के रूप में, बीच–बीच में कुछ विषयों को मन में याद करने से पता चलता है। यह समझ सकते हैं कि यदि आप थोड़ा सा निरीक्षण कर सकेंगे, तो इस तरह से कुछ नये विषयों को जान पाते है।

इसलिए इस अनुभव के बारे में भी आशा नहीं करना चाहिए। वह अनुभव नहीं आया तो आपकी साधना कम होने की भावना नहीं करना चाहिए। यह जान लें कि आप में जो परिवर्तन आता है, आपके व्यवहार में जो परिवर्तन आता है, वही आपके अभ्यास का मापदंड है।

इसी तरह, कुछ लोग ध्यान में वे दिखाई दिए। ये दिखाई दिय। वे बोलते हैं कि उन्होंने मुझे मेसेज दिया। ऐसे अनुभवों के लिए भी खुशी से फूल जाने की कोई जरूरत नहीं है। बड़ाई बोलने की कोई जरूरत नहीं है। यदि कोई संदेश आए तो उसे समझिए बस उनका आचरण करने का प्रयास करिए।

यह न समझते हुए कुछ लोग सलाह लेकर बहुत से लोग ध्यान में ''मास्टरों'' को बुलाते हैं, उन से वे प्रश्न, ये प्रश्न पूछते रहते हैं। उन विषयों को सभी को बोलते रहते हैं। जब मैंने उन्हें बुलाया तो वेही आये है, येही आये है। वे सभी को बताते रहते हैं कि उस मास्टर ने मुझे ये बताया है, वो बताया है।

लेकिन जान लीजिए कि इस सृष्टि में विशेष रूप से कुछ भी पूछने की जरूरत नहीं है, कुछ भी चाहने की जरूरत नहीं है। यह जान लीजिए कि ''जो ध्यान साधना करना चाहिए उसे करने पर जो प्राप्त किए जाने वाले अनुभव, जो संदेश चाहिए, वे खुद ही आ जाएंगे''। यदि आप निर्णय प्रकृति पर छोड़े बिना, जब चाहे तब, जिन्हें चाहते हो उन्हें आने को, दिखाई देने को, वो विषय, संदेह को दूर करने के लिए पूछेंगे तो,यानी चाहेंगे तो, उस तरह होने पर आप कड़ी मेहनत से जो साधना करके हासिल किया हुआ सारी

शक्ति खो देंगे।

क्योंकि ऐसे अनुभव कुछ लोगों को ही आते हैं। सभी को नहीं आते। इसका मुख्य कारण यह है कि जिन लोगों को ये अनुभव हुए हैं, अभ्यास के माध्यम से पर्याप्त शक्ति को हासिल कर लिया है, यही इसका अर्थ है। अगर कुछ लोगों को ऐसे अनुभव नहीं होते हैं, तो इसका मतलब है कि उनके पास पर्याप्त शक्ति नहीं है।

जो कुछ भी हो, निर्णय प्रकृति को छोड़ देना चाहिए। इसके अलावा यदि आप विशेष रूप से चाहेंगे, तो आप इसके लिए कुछ कीमत चुकानी पड़ेगी। पुराणों में विश्वामित्र की कहानी देखा है, है ना? इसलिए अभ्यास करिए। शक्ति को बढ़ाईए। गुणों को बदलिए। क्या व्यवहार बदल गया ? या नहीं? देखिए। देखिए ज्ञान किस हद तक बढ़ गया। इसके अतिरिक्त मुझे क्या करना चाहिए? ऐसा क्यों होता है? इस तरह क्यों होता है? कहकर उनके बारे में, इनके बारे में, उसके बारे में, इसके बारे में अगर आप पूछेंगे तो कड़ी मेहनत से जो साधना करके हासिल किया हुआ सारी शक्ति खो देंगे। वे फिर से सामान्य मनुष्य बन जाते हैं।

वास्तव में आपके पास बुद्धि हो, तो जो तुम्हे चाहिये! जो भी आप जानना चाहते हो! जो भी आप करना चाहते हो ! सभी हमारे पत्रीजी ने हमें पुस्तकों के माध्यम से, संदेशों के माध्यम से सब कुछ बताया है। यदि हम इन्हें सावधानी से पड़ेंगे तो, अध्ययन करेंगे तो, ऐसा कुछ भी नहीं होगा जो हम नहीं जानते, ऐसा कुछ भी नहीं होगा जो हम नहीं जान सकते।

पत्रीजी ने हमें सभी विषयों को इतने विपुल से, विस्तार से बोध किया है। जान लीजिए कि यदि आप पात्रीजी के पुस्तकों को अध्ययन करेंगे तो आप सारी विषयों को जान पाते हैं। पात्रीजी पुस्तकों को पढ़े बिना यदि आप किसी के द्वारा से यह जानने का प्रयास करेंगे तो वह बहुत कम विषयों को जान सकेंगे, इसके अलावा आप अपनी सारी साधना शक्ति को खो देते है। लेकिन पत्रीजी ने हमें बिना नुकसान के ही सारा ज्ञान को हमें दिया है।

दरअसल पात्रीजी का पृथ्वी पर अवतरण इसलिए हुआ कि हमें बिना किसी नुकसान के हमें सारी विषयों को जानकारी देने के लिए। क्योंकि चाहे कोई भी कहे, चाहे कितने भी लोग कहें, 'सत्य' एक ही है। पात्रीजी हर गाँव, देश विदेशों को घूमकर वही 'सत्य का' बोध कर रहे हैं, जानकारी दे रहे हैं । समझने योग्य तरीके से विवरण दे रहे हैं। वे अथक परिश्रम कर रहे हैं। यदि आप वास्तव में पत्रीजी की पुस्तकों को अध्ययन करेंगे तो कोई भी संदेह जैसी कुछ भी नहीं होगा। सभी संदेह चूर-चूर जायेंगे। असल सृष्टि में ही हम सबके लिए पत्रीजी का आना जैसी व्यवस्था हुई है।

यदि हम यह समझ सकते हैं तो, कुछ प्रश्नों के लिया, कुछ संदेह के लिए अपना बहुमूल्य सारी शक्ति को बर्बाद नहीं करेंगे।

इसलिए इन के पीछे मत पड़िए। अनुभवों के लिए आतुरता मत पड़िए। ऐसा सुनने के लिए, देखने के लिए मौज-मस्ती होती है। मौज-मस्ती के लिए अपनी बहुमूल्य शक्ति को नुकसान मत करो। नुकसान होकर मौज-मस्ती मत करिए। शक्ति की महानता को जान लीजिए। शक्ति का मूल्य जान लीजिए। शक्ति हासिल करके आप भी योगियों की तरह शक्तिशाली बनिए। शक्ति को खोकर शक्तिहीन मत बनिए । अपनी मुमुक्षत्व को नहीं खोना। इसीलिए पत्रीजी ने तुलसी दल में अद्भुत संदेश दिया है कि 'मुमुक्षु के शत्रु'। उनका सावधानी से अध्ययन करके उनसे बाहर आइए।

इसलिए तीसरी आँख खुलेगा तो कोई भी दृश्यों को देखेंगे तो, सूक्ष्म शरीर यान करेंगे तो, किसी से मिलेंगे तो, कोई संदेश आएंगे तो भी खुशी से फूल जाने की कोई जरूरत नहीं है। सबसे पहले हमारा व्यवहार बदला ? या नहीं ? ज्ञान बढ़ा ? या नहीं ? देखिए। जो लोग ध्यान करते हैं, उनके लिए दिव्य अनुभव, अलौकिक शक्तियों को प्राप्त होना स्वाभाविक है। इसलिए उनके बारे में खुशी से फूल जाने की जरूरत नहीं है। डींग कहने की कोई आवश्यकता नहीं है। महान भावना करने की आवश्यकता नहीं है।

जान लीजिए कि। ''**जो करना है वह ध्यान है। जो प्राप्त करना है**

वह ज्ञान है,'' यही मानव जीवन का लक्ष्य है। पत्रीजी ने भी यही बोध किया है। यह विषय को जानते हुए,ध्यान अभ्यास पर दृष्टि रखिए। शक्तियों के लिए मत देखो। अनुभवों के लिए उस्तुक न हों। जान लीजिए कि आपके पास अभ्यास है तो शक्तियों के साथ-साथ आपको जो कुछ भी चाहिए वह अपने आप पास आ जाएगा। अभ्यास पर दृष्टि रखिए।

और एक बार जान लीजिए। ''**शक्तियाँ मौज-मस्ती के लिए नहीं। जीवन के लक्ष्यों को हासिल करने के लिए हैं।**'' प्रकृति को अंदाज कम मत आंकिए। प्रकृति के बारे में, प्रकृति की शक्ति के बारे में जान लीजिए। प्रकृति के अनुसार जीना है।

हम सब प्रकृति में जी रहे है इसे याद करते रहना चाहिए। यह कभी न भूलें कि प्रकृति गौर से देख रही है, जो कुछ भी काम करते हैं, हर पल, प्रकृति हमें गौर से देख रहा है। ''जान लिजिए कि हम जो काम करते हैं, उसके अनुसार ही परिणाम मिलते हैं''। प्रकृति के नियमों के अनुसार जीना है। इसमें भी जो लोग ध्यान के मार्ग पर आ गए हैं, यानी जिज्ञासुओं को, मुमुक्षुओं को अधिक सावधानी से रहना चाहिए।

ब्रह्मर्षि पत्रीजी के संदेशों को सावधानी से समझिए, अनुसार करिए। ध्यान अभ्यास के मार्ग में पल-पल सचेत होना चाहिए। जीवन का परमार्थ जान लीजिए। जीवन के लक्ष्य को हासिल करिए। जीवन को पूर्णता से सद्विनियोग कीजिए। जीवन को धन्य कीजिए।

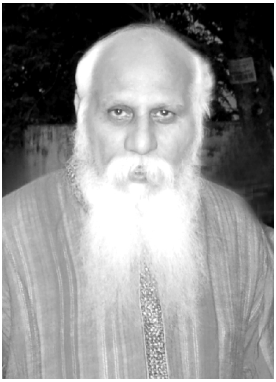

मुमुक्षु के शत्रु

चार प्रकार के शत्रुओं से... ''मुमुक्षु'' को अपने आप रक्षा करनी चाहिए। वे हैं:

1) भय, 2) सीमित ज्ञान

3) सिद्धियों से आने वाला अहंकार

4) बुढ़ापे की आलसी भावनाएँ

1) ''**भय**'' मुमुक्षु का पहला शत्रु है। मुमुक्षु को सबसे पहले सभी प्रकार के भय पर काबू पाना होगा। तभी '' ज्ञान'' का अंकुर उगता है।

लेकिन प्राधमिक, सीमित ज्ञान को ''पूर्ण ज्ञान'' सोचने का खतरा भी हमेशा होता है।

2) ''**सीमित ज्ञान**'' मुमुक्षु का दूसरा शत्रु है वे इससे छुटकारा पाएंगे तो सिद्धों को प्राप्त करेंगे।

सिद्धों को प्राप्त करने पर गर्व बढ़ेगा तो फिर से पतन की ओर ले जाता है। सिद्धों का हासिल करना चाहिए।

लेकिन हमारे गर्व से खुद को बचाना होगा।

3) ''**सिद्धियों से आने वाला अहंकार**'' यह मुमुक्षु का तीसरा शत्रु है।

इस पर जितने के बाद भी अंत तक कभी भी थकान को यानी ''बुढ़ापे की आलस्य भावनाओं'' के आगे कभी न झुकें।

4) ''**बुढ़ापे की आलस्य भावनाएँ**'' मुमुक्षु का अंतिम शत्रु है।

▲ **भय, सीमित ज्ञान, सिद्धियों से आने वाला अहंकार, बुढ़ापे की आलस्य भावनाएँ... इन चार शत्रुओं को जीतना है। हमें हर समय इन शत्रुओं के प्रभाव से स्वयं को रक्षा करना चाहिए।**

पुराणों में अलौकिक शक्तियों के बारे में...

अलौकिक शक्तियाँ पूर्ण ज्ञान नहीं हैं। आपको जानना चाहिए कि केवल पूर्ण ज्ञान हासिल करने का मार्ग है। इसलिए लक्ष्य पूर्ण ज्ञान पर होना चाहिए। पुराणों में ऐसे बहुत से लोग दिखाई देते हैं, जो अलौकिक शक्तियों को देखकर गर्व होकर पतन हो गए। इसी प्रकार, पुराणों में हम ऐसे लोगों को दिखाई देते हैं जो अलौकिक शक्तियों को, सिद्धियों को कोने पर भी उनके बारे में सोचे बिना ऐसे व्यवहार करते हैं मानो कुछ हुआ ही न हो फिर भी पूर्ण ज्ञानी बन गए ।

इसलिए आइये उपरोक्त विषयों के बारे में पुराणों में कुछ सन्निवेशों के बारे में जानेंगे। मुख्यत: रामायण में से जानेंगे।

रामायण में वानर राजा, वीर 'वालि' अपार बालसंपन्न,सिद्धि होने वाला। उनको सामने वालों में होने ताकत हीनने की यानी खींचने की शक्ति यानी सिद्धि है। इसीलिए श्री राम ने पेड़ के पीछे से मारना पड़ा।

जो इतना बल संपन्न, सिद्धि होने 'वालि' ने गर्व से, अहंकार के साथ अपने छोटे भाई सुग्रीव को भगा दिया और उसकी पत्नी को बलात्कार दिया। अर्थात वह स्त्रियों का दास बन गया। वह 'कामातुर' हो गया । अवैध से व्यवहार किया। सृष्टि के विपरीत व्यवहार किया। अंत में वह श्री राम के हाथों में मारा गया। अर्थात नाश हो गया। इसके आधार पर हम रामायण के इस सन्निवेश के आधार पर

जान सकते हैं कि जो कोई भी सिद्धियों होने पर गर्व करके उन सिद्धियों का उपयोग करके जो काम नहीं करना चाहिए वो करेंगे तो कोई भी नाश हो जाएगा।

इसी प्रकार रामायण के एक महत्वपूर्ण पात्र है, अंजनेयास्वामी को भी बहुत सिद्धियां हैं। लेकिन उन्होंने उन्हें देखकर गर्व नहीं किया।अहंकार से व्यवहार नहीं किया। चाहे कितनी भी सिद्धियां होने पर भी , ऐसा व्यवहार करते थे जैसे उनके पास कुछ भी नहीं। वे कैसे रहते थे, यानी उनकी शक्ति उन्हें किसी और को याद दिलाना पड़ता था। वे उन पर गर्व नहीं करते थे, उनके होने पर डींग नहीं कहते थे। अर्थात उनके पास सब होने पर भी ऐसा व्यवहार करते थे, जैसे उनके पास कुछ भी नहीं। जितना हे, उससे अधिक कह रहे हैं। लेकिन अभी कुछ भी नहीं होने पर भी ऐसे डींग कर रहे हैं जैसे सब कुछ है।

हम रामायण में एक सन्निवेश के माध्यम से हम इस विषय को जान सकते हैं। सीता की खोज में लंका तक पहुंचने के लिए 100 योजनाओं समुद्र को छलांगकर पार करना होगा। यानी पार करना होगा। वहाँ मौजूद सभी वानर योद्धाओं 10, 20, 30,50 ऐसे कुछ योजनाओं को छलांगकर पार करने की शक्ति होने वाले ही है, लेकिन 100 योजनाओं छलांगकर पार करने वाला कोई भी नहीं है। वे एक- दूसरे को अपने कूदने की शक्ति के बारे में कह रहे हैं। लेकिन हनुमानजी एक तरफ ऐसे बैठे रहे, जैसे की वे कुछ कर ही नहीं सकते। तब जांबवंत हनुमानजी के पास गए क्या ? आप ऐसे बैठे हैं जैसे कुछ

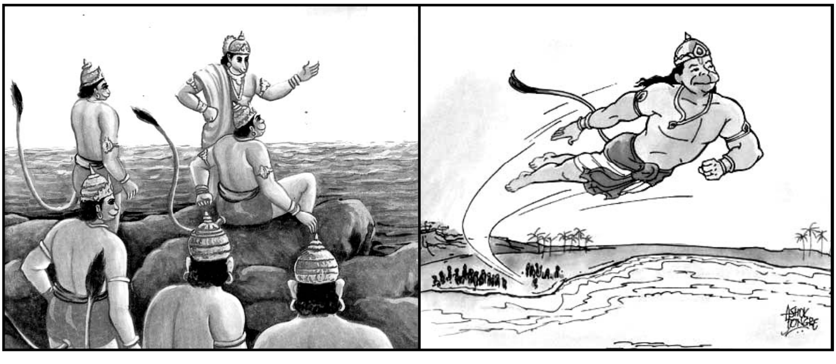

भी कर ही नहीं सकते। आप वह काम कर सकते हैं। जब हनुमान को कहते कि वे यह कार्य कर सकते हैं तो वे कार्य करने के लिए तैयार हो गये। उस कार्य को विजयता जैसे पूरा करके आ सके है।

इसके आधार पर हमें यह जानना चाहिए कि हमें ऐसे सिद्धियाँ होने पर भी ऐसे व्यवहार करना चाहिए जैसे कि वे नहीं हैं गर्व से इतराना नहीं चाहिए, और उन शक्तियों से लोक-कल्याणकारी कार्य करने चाहिए।

इतना ही नहीं, हमें यह भी जानना चाहिए कि चाहे हनुमानजी के पास कितने सिद्धियां होने पर भी, कितनी शक्तियों का प्रदर्शन करने पर भी , महान कार्यों को करने पर भी, उन्हें आत्म-ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ। आत्मा के तत्व को नहीं समझता। आत्मा का अनुभव नहीं हुआ। उस 'आत्मा' को, यानी उस आत्मा राम को दर्शन के लिए वे बहुत उत्सुक थे। वह बहुत आवेदन हुआ। श्री राम के राज्याभिषेक होने के बाद, उन्होंने आवेदन से अपने मोतियों की माला के सभी मोतीयों को काटकर देखा लेकिन आत्मा राम दिखाई नहीं दिया।

जब हनुमानजी ऐसा कर रहे थे, तब श्री रामचन्द्र को यह ज्ञात था कि हनुमानजी आत्मा का अनुभव करने के लिए उत्सुक हैं, इसलिए उन्होंने हनुमानजी को अपने मंदिर को बुलाया, उन्हें आत्म-ज्ञान का बोध किया। बोध देने के बाद श्री राम ने हनुमानजी से पूछा। अब तुमको आत्मा ज्ञान हुआ क्या? आप आत्मा तत्व को समझ में आया क्या? अर्थात हनुमानजी ने कहा कि, समझ में आया। जैसे ही श्री राम ने विवरण देने को कहा तब, हनुमानजी ने इस तरह तीन बातों में आत्मा तत्व का विवरण दिया ।

''जब मैं शरीर के स्थिति में हा तब मैने सोचकी मैं तुम्हारा सेवक हूँ। यानी मुझे लगा कि आप और मै अलग है। जब मैं मनोस्थिति में

हा तो मुझे लगा कि आप मुझमें हैं। लेकिन आत्मा स्थिति में मुझे एहसास हुआ कि आप और मैं एक ही हैं।'' जब उन्होंने ऐसा कहा तो श्री राम ने उनकी प्रशंसा करते हुए कहा, आप आत्मा ज्ञानी हो गए हैं।

उपरोक्त विषयों से यह स्पष्ट है कि सिद्धियां, शक्तियां परिपूर्ण स्थिति नहीं हैं। हम समझ सकते हैं कि आत्म-ज्ञान सबसे पूर्ण स्थिति है। इसलिए क्या ध्यान करने वालों को अनुभवों को, शक्तियों को पाया है ? या नहीं ? उन्हें यह देखना नहीं चाहिए, उन्हें कोई महत्व देने की आवश्यकता नहीं है। यह हमें जानना चाहिए कि यदि किसी को सिद्धियाँ मिल भी जाएँ, तो भी हनुमानजी की तरह कुछ भी नहीं जैसा व्यवहार करने वाला ही महान कहलाता है।

लेकिन आप वर्तमान में ध्यान करना , ध्यान के बारे में बताना, ध्यान प्रचार कार्यक्रमों में भाग क्यों कर रहे हैं, इसका कारण यह है कि उनकी सांसारिक समस्याएं हल हो जाएंगी, सांसारिक इच्छाएं, स्वास्थ्य समस्याएं , आर्थिक समस्याएं हल हो जाएंगी, जीवन बिना किसी बाधा के, रुकावट के सुचारू रूप से चलता रहे, उपरोक्त कार्यक्रमों कुछ अनुभवों को प्राप्त करने के इरादे से अभ्यास किया जा रहा हैं। ऐसा करते हुए, कुछ अनुभवों को होने पर, मैं ने अनुभवों को प्राप्त किया है । लाभ आए है, ऐसा वे डींगें कह रहे हैं, लेकिन क्या उन्होंने अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए, क्या ज्ञान बढ़ा है ? या नहीं ? इस कि ओर कोई दृष्टि नहीं दे रहा है। ध्यान... ज्ञान के लिए है, यह समझ किसी के पास नहीं है।

इसी प्रकार श्री आदि शंकराचार्य की अपनी पर्यटन के दौरान एक सिद्ध पुरुष को मिले, उनसे उन्होंने कई सिद्धों को सीख लिया। उन्होंने उनसे परादेहप्रवेश की जैसी विद्याओं सीखा।

उस संदर्भ में उस सिद्ध पुरुष ने कहा कि हर सभी प्रकार से सब कुछ होते हुए भी, मैं इन लोगों की मूर्खता, अज्ञानता को देखकर, उनसे किए गए कामों को देखकर परेशान होकर, सबकुछ छोड़कर कठोर साधना करके इस प्रकार सिद्धियां हासिल किया। इन सिद्धियों का, शक्तियों का उपयोग

करके लोगों को बदलना चाहता था। बुद्धिमान बनाना चाहता था, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सका। ऐसा कहा गया कि वह तुम जैसे ज्ञानी से ही संभव होगा। उन्होंने सभी प्रकार के सिद्धियां, शक्तियां होते हुए भी अपनी लाचारी स्वीकार कर लिया।

इसके अनुसार सिद्धियां, शक्तियाँ पूर्ण ज्ञान के संकेत नहीं हैं। वे ज्ञान प्राप्त करने में सहकार देते हैं। पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने में बहुत उपयोगी हैं। लेकिन यह जानना चाहिए कि उनके साथ पूर्ण ज्ञानी नहीं बने। इसके अलावा दुनिया को, लोगों को बुद्धिमान बनाने के लिए यानी सिद्धियां और शक्तियां पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए ज्ञान की चाहिए । यह समझा जा सकता है कि ज्ञानी ही ज्ञान सिखा सकता है, लेकिन वह नहीं सिखा सकता जिसके पास शक्तियां हैं। सिद्धियाँ, शक्तियाँ ज्ञान प्राप्ति करने के लिए पहले स्थिति हैं, परिपूर्ण स्थिति नहीं है। यह समझना चाहिए कि सिर्फ उन्हें प्रदर्शित करने से उतना महान नहीं होता।

इसलिए ज्ञान की महानता को जानिए, ज्ञान की आवश्यकता को समझिए। ज्ञान को बढ़ाइए। बुद्धिमान बनिए। ऐसे ही अनुभवों के लिए उत्सुक होना चाहिए। उनसे देखकर प्रसन्न मत होइये। जिनके पास ये हैं, उन्हें देखकर महान मत सोचो। क्या करना है उसे जानकर जो प्राप्त करना है उसे जानिए। एक बार फिर जानिए। **''जो करना है वो ध्यान है। जो प्राप्त करना है वो ज्ञान है।'' कारण यह है कि ''ध्यान से ही ज्ञान, ज्ञान से ही मुक्ति।''**

Information available on Tatavarthy's website:

Website address: www.tst.org.in

a) Details of programs conducted under the guidance of Mr. and Mrs. Tatavarthy and Google Maps location are available.

b) All books by Mr. and Mrs. Tatavarthy are available in PDF format for free download in Telugu, Kannada, Hindi, and English languages.

c) All the messages of Mr. and Mrs. Tatvarthy are organized in concept-wise YouTube playlists.

d) Summaries of Mr. and Mrs. Tatavarthy's messages are provided in the form of quotations.

e) The gallery of Mr. and Mrs. Tatavarthy is also available.

For registration of a 3 day free meditation and soul-knowledge training classes held in Bhimavaram on the 1st, 2nd, and 3rd of every month, contact Sindhura, 8555995217.

Programs by the Tatavarthy's that will be broadcasted on YouTube:

a) Channel name: **Tatavarthy Veera Raghava Rao**

This channel has 2,000+ videos featuring messages from Mr and Mrs Tatavarthy.

b) PMC has also launched a YouTube channel for Brahmarshi Tatavarthy Veera Raghava Rao.

Channel name: **Brahmarshi Tatavarthy Veera Raghava Rao.**

c) For messages from trainees who have trained under Mr. and Mrs. Tatavarthy, watch the Tatavarthy Spiritual Trainees YouTube channel.

d) You can also go directly to the YouTube app, type Tatavarthy Veera Raghava Rao in the search bar, and watch all the Mr. and Mrs.Tatavarthy videos.

Programs by the Tatavarthy's that will be broadcasted on YouTube:

a) Channel name: **Tatavarthy Veera Raghava Rao**

This channel has 2,000+ videos featuring messages from Mr and Mrs Tatavarthy.

b) PMC has also launched a YouTube channel for Brahmarshi Tatavarthy Veera Raghava Rao.

Channel name: **Brahmarshi Tatavarthy Veera Raghava Rao.**

c) For messages from trainees who have trained under Mr. and Mrs. Tatavarthy, watch the Tatavarthy Spiritual Trainees YouTube channel.

d) You can also go directly to the YouTube app, type Tatavarthy Veera Raghava Rao in the search bar, and watch all the Mr. and Mrs.Tatavarthy videos.

To watch Tatavarthy's zoom sessions:

a) Silence meditation from **4 a.m.** to **6.30 a.m.**, followed by messages related to soul-knowledge from **6.30am** to **7.30am.**

Zoom ID: **2413823868** Password: **RAO**

b) The above-mentioned Zoom session will also be livestreamed on **YouTube** from **6.30am to 7.30am.**

c) Those who are in the TVR & TRL WhatsApp group will receive Zoom and YouTube links, along with details about the Tatavarthy's classes. They must save Sindhura's phone number: **8555995217**

d) Those who wish to join the Tatavarthy's WhatsApp group can contact Sindhura: 8555995217, Madhu: 7893917364 or visit www.tst.org.in and click on the "Join WhatsApp Group" link.

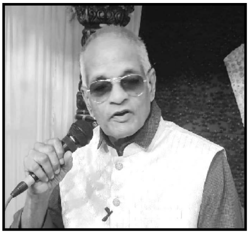

Tatavarthy Raghavarao Sir Books in English

1.	Life Science (Part-I)	Rs.120
2.	Why is Guiding Not Meditation ?	Rs.100
3.	Which is the right Meditation ?	Rs.100
4.	Die before death!	Rs.120
5.	The Law of Karma	Rs.100
6.	What is Meditation?	Rs.80
7.	True Path	Rs.80
8.	Why soul-knowledge	Rs.70
9.	What comes after death ?	Rs.70
10.	How to improve Financial Status ?	Rs.60
11.	Wisdom is attained only through Meditation	Rs.60
12.	What is Intention?	Rs.50
13.	Why is this life?	Rs.50
14.	Vegetarian Food Is Human Food	Rs.50
15.	Meditation for the Development of Students	Rs.40
16.	Non violence and vegetarianism	Rs.40

श्री तटवर्ती वीर राघवराव के हिन्दी किताब

1. आत्म शास्त्र ।.. Rs.200/-
2. ध्यान विद्या ।.. Rs.160/-
3. भगवद् गीता का सार ।.. Rs.160/-
4. सत्य मार्ग ।.. Rs.160/-
5. मरने से पहले मरना है।.. Rs.130/-
6. गाईडिंग ध्यान क्यों नहीं ?....................................... Rs.120/-
7. भगवान कौन है।.. Rs.120/-
8. कर्म सिद्धांत ।... Rs.120/-
9. विज्ञान का अर्थ – निहितार्थ ।.................................. Rs.120/-
10. ब्रह्म ज्ञान ।.. Rs.100/-
11. यह जीवन क्यों है ? Rs.100/-
12. मेहर बाबा का संदेश ।.. Rs.100/-
13. कौन सा ध्यान सही है ?.. Rs.100/-
14. मरने के बाद, साथ में आने वाले विषयों ।.................Rs.80/-
15. भगवत के दृश्यों का अर्थ ।...Rs.80/-
16. आत्म हंतक कौन होता है ।...Rs.70/-
17. स्त्री जन्मों में सीखने वाले विषयों, पुरुष जन्मों में सीखने वाले विषयों।. Rs.70/-
18. दुख निवारण का मार्ग...Rs.75/-
19. उत्तम पुरूष...Rs.60/-
20. आर्थिक स्थिति बढाना है तो ? Rs.60/-
21. निर्वाण मार्ग...Rs.60/-
22. सत्य...Rs.50/-
23. क्या हम इस लोक के वासी हैं या परलोक के वासी हैं ? Rs.50/-
24. गुरू को पहचानना कैसे ?...Rs.50/-
25. विद्यार्थियों के विकास के लिए ध्यान विद्या Rs.50/-
26. शाकाहार ही मानव का आहार है!...............................Rs.50/-
27. ब्रह्मं क्या है ? Rs.50/-
28. संकल्प अर्थात ? Rs.40/-

For Books Contact : TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO
BHIMAVARAM-534201. CELL: 9490171853, 9440309812

मनुष्य अपने आत्म-परीणाम क्रम में
जब नास्तिकता से आस्तिकता में आने के बाद
मूढ़-भक्ति में पहले ''परवश'' होता रहता है।
''परवश'' अर्थात ''औरों के वश में होने वाला।''
लेकिन बाद में

''ध्यान से ही ज्ञान, ज्ञान से ही मुक्ति''

इस परम सूत्र को क्रमतः क्रमशः को जानते हुए
तीव्र साधनाओं के द्वारा अष्टसिद्धियों को प्राप्त करते हुए
वह परमगुरु के स्थाई तक पहुंच जाता है
''स्ववश'' हो जाता है।
उस स्थाई तक पहुँचने वाले को सामान्य आस्तिक
उनके भक्त होने वाले ''भगवान'' कहते हैं।
वैसे दिव्यता को हासिल करने वाला
मानव ही 'भगवान' है।

- ब्रह्मर्षि पत्रीजी

Rs.50/-